श्रम विभाग

बादेश

दिनांक 4 दिसम्बर, 1987

सं भो वि /एफ वि / 48536. -- मूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं हरियाणा पेपर मिल्ज, 50-51, एन भाई टी , फरीदाबाद, के श्रीमक प्रधान/महा सचिव, हरिवाणा पेपर इम्पलाईज युनियन, 50-51, एन भाई टी , फरीदाबाद तथा प्रवत्वकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीयोगिक विवाद है;

बीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भोखोगिक विवाद मधिनियम, 1947 की छारा 10 की उपधारा (1) के खण्ट (घ) हारा प्रदान की गई मिलायों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त मधिनियम की छारा 7-व के मधीन गठित भौदोगिक सिकारण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिद्दिष्ट भामला जो कि उक्त प्रयन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवाद प्रस्त भामला है भथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट छ: मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:--

क्या प्रवन्धकारिणी द्वारा कारखाने की दिनांक 1 प्रक्तूबर, 1987 से की गई तालाबन्धी न्यायोचित तथा ठीक है ? बदि नहीं, तो वह किस विवरण से है ?

सं बो वि /एफ वि । / 91-87/48559.--चूं कि हरियाणा के राष्यपाल की राय है कि मैं र रहबड़ उद्योग विकास प्रा० सि o, प्लाट नं o 60, सैक्टर 25, बरलक्यड़, के श्रमिक/प्रधान/महा सचिव, रहबड़ उद्योग इम्पलाईज युनियन मार्फत श्री सुभाष चन्द्र, मकान तं o 76, श्याम कालौनी, बहलदगढ़ हरियाणा तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई मौद्योगिक विवाद है;

धीर पृक्ति हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिग्ट करना वांछनीय समझते हैं :

इसिनये, प्रव, भौदोगिक विवाद शिविनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) हारा प्रदान की गई सकितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उनत शिविनयम की खारा 7-क के अधीन गठित भौदोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उनत प्रवन्धकों तथा खिमकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामले हैं भथवा विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट छ: मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

- (1) क्या संस्थाका प्रत्येक कामगार दो जोड़े यूनिफार्म लेने का इवदार है? श्रीट हां, तो किस दिवरण से है?
- (2) क्या संस्था का प्रत्येक कामगार दो जोड़े चमड़े के जूते लेनें का हकदार है ? यदि हां, तो किस विवरण से ?
- (3) क्या संस्था के सभी कामगार धुलाई मत्ता 20 रुपये मासिक लेने के हकदार हैं ? यदि हां, तो किस विवरण से ?

मीनाक्षी ब्रानन्द चौधरी, ब्रायुक्त एवं सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम तथा रोजगार विभाग।

श्रम विभाग

मादेश

दिनांक 8 दिसम्बर, 1987

सं० भो० वि०/एक डी/43-84/48891.--चूकि हिग्यामा के राष्ट्रणाल की राय है कि मैठ वलच ग्राटो लिठ प्लाट म० 111/112, सैंक्टर 6, फरीदाबाद, मार्फत प्लाट नंठ 1-ए, सबटर 27-डी, फरीदाबाद, के श्रमिक सर्वश्री पुरेत सिहं तथा प्रत्य 5 श्रमिक मनुबन्ध "क" मार्फत सीटू 2/7, गोपी, कालोनी, पुराना फरीदाबाद तथा प्रवन्धकों के मध्य इसर्थे इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीदयोगिक विवाद है; भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, मन, मौकोगिक विवाद मिश्वनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उनत मिश्वनियम की धारा 7-क के मिश्रीन गटित मौद्योगिक मिश्रकरण, हरियाणा, परीदाबाद, को नीचे विनिद्धित मामला जो कि उनत प्रवन्धको तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है मध्या विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या सर्वेश्री सुरेश सिंह तथा ग्रन्य 5 श्रमिकों (ग्रन्बन्ध 'क'') की सेवा समान्त की गई है या उन्होंने स्वबं त्याग-पत्र देकर नौकरी छोड़ी है ? इस बिन्द् पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत के हकदार हैं ?

प्रनव्€ध ''क"

- श्री सुरेश सिंह, पुत्र श्री कुलदीप सिंह,
- 2. श्री बंगाली शाह, पुत्र श्री रामचरन,
- श्री सत्यनारायण, पुत्र श्री झ्यु,
- श्री मोती लाल, पुत्र श्री केंसर सिंह,
- श्री रामबहादुर, पुत्र श्री राम चन्द्र,
- 6. श्रीखचेरा,पृत्रश्रीद्यासी

बिनोक 9 दिसम्बर, 1987

मं० पो०वि०/भिवाती/149-86/49153.— मृंकि हरिबाणा के राज्यपाल की राय है कि प्रबन्धक निदेशक, दी भिवानी सैन्ट्रल कोप्रेटिब बैंक लि०, भिवानी, के विक्रिक श्री महावीर प्रणाद कैण्यिर, एव श्री जगननाथ शर्मा, मार्फत ठाकुर भानी सिंह की गली, लोहड़ बाजार, भिवानी, तथा उनके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदीगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाचा के राज्यपास इस विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

इसलिये, भव, भीद्मोगिक विवाद मिश्चितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खब्द (ग) द्वारा प्रदान की वर्ष शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिस्चना मं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी प्रधिस्चना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामना न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामना है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामना है :---

क्या श्री महाबीर प्रसाद की सेवाझों का समायन ग्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनाक 10 दिसम्बर, 1987

सं बो वि | सिवानी | 240-87 | 49284. -- चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं । मिचन, हरियाणा खादी मण्डल, हांसी रोड, भिवानी 2. चेयर मैंन, हरियाणा खादी मण्डल, भिवानी, के श्रीमक श्री हवा मिह, पृत्र श्री केर सिंह जाट, मकान नं 18 | 118, नाईयों वाली गली, विचला बजार भिवानी तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई धीद्योगिक विवाद हैं ;

मीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैत् निविध्ट करना विकिनीय ममझते है:

इसलिये, ग्रब, ग्रौनोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्रवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं०9641-1-श्रम 78/ 32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत भथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री हवा सिंह की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो वि०/भिवानी/248-87/49292.---चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं प्रबन्धक, दी दादरी प्राईमरी की व एग्रीकल्चरल डिवेल्मेंट, बैंक, लिं०, चरखी दादरी, जिला भिवानी, के श्रीमिक श्री जगवीर सिंह, पियनकम-चौकीदार, पुत्र श्री हवा सिंह, गांव सारन्जपुर, डा० नन्दगांव, जि० भिवानी तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

भौर पुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हुतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, मब, मौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी मिधिसूचना की धारा 7 के मिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद स्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से स्संगत प्रथवा सम्बन्धित है:---

क्या श्री जगबीर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बहु किस राहत का हकदार है ?

सं. भी. बि./पानी/138-87/49299.—चूं कि हरियाणा के राज्यपास की राये है कि मैं बजरंग विविग इण्डस्ट्रीज, कटारिया कालोनी, पानीपत के श्रीमक श्री प्रहलाद सिंह मार्फत कर्ण सिंह, मकान नं 134, वीवर्ज कालोनी, पानीपत तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्गय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भोचौगिक विवाद अविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैस, 1984 द्वारा उक्त अविसूचना की धारा 7 के अबीन गठित श्रम न्यायालय, अन्वाला, को विवादप्रस्त या उसते सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं बंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अववा सम्बन्धित मामला है :---

नया श्री प्रहलाद सिंह की सेवाधों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राइत का हकदार है ?

सं को वि वि वि (भिवानी 216-87 49306 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै व मुख्य कार्यकारी ग्रधिकारी, दी डिस्ट्रिक्ट मिल्क प्रोडयूसर्ज कोपरेटिव यूनियन लि व., भिवानी के श्रीमक श्री लक्ष्मी नारायण, पुत्र श्री चिरन्जी लाल, गांव चन्दावास, तह वि तथा जिला भिवानी तथा उसके प्रश्नासकों के बीच इसमें इसके बाद लिखिस मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिग्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रंब, ग्रौदोगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 न विवाद में स्वरूप के साथ गठित सरकारी मिधिसूचना की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय, बोहतक को विवाद मस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्देश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित हैं:---

क्या श्री लक्ष्मी नारायण की सेवाब्रों का समापन न्यायोधित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

> मार० एस० सम्बल, उप सचिव, इरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।